बाइबल का प्रभाव

यह कि बाइबल की शिक्षा का प्रभाव शक्तिशाली होगा, और यह प्रभाव समझाने (जीतने से) से होगा, बाइबल से सम्बन्धित प्राचीन भविष्यवाणियों की बातें हैं। यद्यपि असंख्य लोगों ने परिवर्तित होना था, फिर भी मसीहियत का उद्देश्य संख्या गिनना नहीं है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को नैतिक और आत्मिक रूप से प्रभावित करना और नये सिरे से जन्म लेने वालों को पैदा करना है। मसीही प्रभाव की कहानी इसके ईश्वरीय मूल से होने के निरुत्तर करने वाले प्रमाणों में से एक कारण उपलब्ध करवाती है।

लोकोपकारी व्यवहार

नेक सामरी की कहानी में, यीशु ने सिखाया था कि जिन्हें प्रेम और सहायता की आवश्यकता है हमारे पड़ोसी हैं, चाहे वे विदेशी ही क्यों न हों। इस प्रकार यीशु ने सब मनुष्यों को भाई बनाया और अपनी इच्छा व्यक्त की कि सब लोगों के साथ मानवीय व्यवहार किया जाए।

बच्चे

अत्यधिक व्यस्त होने के बावजूद, यीशु ने बच्चों को अपनी बाहों में लेने के लिए समय निकाला। छोटे बच्चों के प्रति उसके कार्यों और व्यवहार से लाखों-करोड़ों लोगों के जीवनों पर प्रभाव पड़ा है। मसीहियत को स्वीकार करने वाले और दूसरे बहुत से लोगों ने भी बच्चों को अनदेखा करने की अमानवीय क्रूरता को देखा था। वे ऐसी बातों के विरुद्ध शिक्षा देने और इन्हें बदलने का प्रयास करने लगे। स्पष्ट किया गया है कि यीशु ने जीवन के उन समयों को पवित्र करने के लिए शैशवकाल और बचपन का अनुभव किया था। जीवन के अनमोल होने से सम्बन्धित यीशु की शिक्षा रूपी खमीर ने सम्राट के महल को प्रभावित किया था; और बीस सदियों बाद, वह खमीर आज भी कार्य कर रहा है। करोड़ों लोग जो मसीही नहीं भी हैं बच्चों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार की बात से ही दहल जाते हैं।

महिलाएं

महिलाएं यीशु के काम में सहभागी थीं। उसका उनकी सहायता स्वीकार करना और

उनके अधिकारों की रक्षा करने से संसार के इतिहास पर बहुत प्रभाव पड़ा था। पुराने ज़माने में स्त्री की स्थिति एक गुलाम से अच्छी नहीं थी। पहले जहां विवाहित स्त्री को पति की संपत्ति माना जाता था, वहीं अविवाहित, स्त्री को खिलौना या आदमी की गुलाम माना जाता था, परन्तु उसके बराबर कभी नहीं।

महिलाओं का तिरस्कारपूर्ण अविश्वास बड़े-बड़े विद्वानों पर भी हावी था। कहते हैं कि सिसरो के विस्तृत लेखों से कभी पता नहीं चल सकता है कि उसकी कोई मां थी। नये नियम में आगस्टन के काल के सभी कार्यों में मिलने वाली महिलाओं से अधिक के नाम देकर उन्हें सम्मानित किया है। मूर्तिपूजक, कुतर्की और धर्म त्याग करने वाले सम्राट जूलियन के शिक्षक, लिबेनियुस ने अन्थुसा नामक एक मसीही मां की ओर ध्यान दिया और चिल्लाकर कहा, ''इन मसीही लोगों की माताएं कैसी हैं!'' अब मसीह को ग्रहण करने वाले करोड़ों लोग भी नारी के महत्व की, उसकी शिक्षा की कुछ बात मानने लगे हैं।

विवाह तथा घर

बाइबल का सम्मान न करने वालों के विचार में विवाह के महत्व और पवित्रता का महत्व कम ही रहा है। रोमी लोग घर तथा विवाह को तुच्छ मानते थे। लोग विवाह से इतना बचते थे कि अगस्तुस को कुंवारों पर टैक्स लगाने पड़े क्योंकि परिवार की इकाई का टूटना राज्य के लिए विनाशकारी था। जो विवाहित होते थे उनमें भी नैतिकता, जो कि किसी भी देश के लोगों की सामर्थ तथा शान होती है बहुत कम पाई जाती थी। फिर, जैसे कि एक लेखक ने कहा है, ''विवाह के बन्धन उतनी ही जल्दी टूट जाते थे जितनी जल्दी बनते थे।'' मूर्तिपूजक रोमियों में तलाक की बारम्बारता से अमेरिका में होने वाले तलाकों की बारम्बारता याद आ जाती है, जिसने एक मसीही राष्ट्र के रूप में शुरुआत की थी। मसीह के पीछे गंभीरता से चलने वालों में, मसीहियत का प्रभाव परिवारों को जोड़कर और विवाह की पवित्रता को बनाए रखता है।

निर्धन तथा रोगी

यूनान और रोम के धर्म और फिलॉस्फी ने निर्धनों को सांत्वना देने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया है। जिन देवताओं की वे पूजा करते थे उनके चित्रों को क्रूर बनाकर प्रस्तुत किया जाता था। मूर्तिपूजक देशों में चेरिटेबल संस्थाओं का किसी को पता नहीं था।

एक धनी रोमी का दूसरे रोमी से प्रश्न था, ''तुम अपने आपको इतना नीचा कैसे कर सकते हो कि किसी निर्धन व्यक्ति को तिरस्कृत करके अपने से दूर न भगा पाओ?'' रोम में भिखारियों के झुंडों को कभी-कभी भीख मिल तो जाती थी, परन्तु यह भीख अनिच्छा से ही दी जाती थी। इसके विपरीत, मसीही लोगों ने, भिखारियों और सताए हुए लोगों में परमेश्वर का स्वरूप देखकर बेसहारों की सहायता करके मूर्तिपूजकों का मन जीत लिया है। आज भी, बेशक नास्तिक लोग मानवीय अधिकारों पर मसीहियत का प्रभाव कम तो करते हैं, परन्तु यह सच्चाई है कि ये अधिकार मसीहियत के कारण ही मिलते हैं। ऐसे विशेष

अधिकार उन देशों में नहीं मिलते जिन पर दूसरे धर्मों का राज्य है।

इसके अलावा, मसीह का ऐसे लोगों पर तरस जिनके पास भोजन नहीं था, आधुनिक समाज में दिखाई देता है। ऐसा केवल उसके चेले बनने वालों में ही नहीं, बल्कि उन करोड़ों लोगों में भी सत्य है जो मसीही नहीं हैं। लाखों-करोड़ों गैर मसीहियों ने बाइबल की शिक्षाओं से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से तरस के कार्यों के लिए अपने हृदयों में जोश भरा है।

तलवारबाज़ी के संघर्ष

मनोरंजन की बिगड़ी हुई अनुभूति के लिए प्राचीन रोम में तलवारबाजी के भयंकर युद्ध में जीत पर पारितोषिक दिया जाता था। इस प्रकार की अमानवीय क्रूरता को पूरी तरह बन्द करने का श्रेय मसीहियत के प्रभाव को ही दिया जाना चाहिए।

गुलामी

मसीह के समय में, रोमी साम्राज्यों में छह करोड़ स्वतन्त्र पुरुष और छह करोड़ गुलाम थे। इन गुलाम लोगों को भूमि या पशुओं से भी निम्न समझा जाता था। रोमी कानून के अनुसार हल जोतने वाले बैल की हत्या का दण्ड मृत्यु था, परन्तु गुलाम की हत्या का कोई दण्ड नहीं था। सम्राट ट्राजन ने लोगों के मनोरंजन के लिए अखाड़े में एक बार में दस हज़ार गुलामों को ज़बरदस्ती लड़वाया था।

इतिहास में दर्ज है कि, मसीहियत ने किसी क्रांति का प्रचार तो नहीं किया, परन्तु इसने ''निष्पक्ष न्याय, आत्मत्याग करने वाले प्रेम और भाइचारे की एकता के ज़ोर से गुलामी को नीचे-नीचे जड़ से खोद दिया।'' विश्वव्यापी भाइचारे की महान शिक्षा की तुलना गुलामी के घृणित अपराध पर कुल्हाड़ी से की गई है। अब लगभग किसी भी सभ्य देश में गुलामों के स्वामियों का समाचार नहीं मिलता है।

युद्ध

यदि सारे देश मसीहियत के विश्वव्यापी भाइचारे की शिक्षा को मान लें तो युद्ध पूरी तरह से समाप्त हो सकते हैं। भाइयों के रूप में रहने की मनुष्य जाति की अयोग्यता के बावजूद, जहां मसीहियत फैलती है वहां पर युद्ध की इच्छा मर जाती है। मसीह के प्रति समर्पण करने वाले लोगों द्वारा विजय पाने के लिए युद्ध आरम्भ नहीं किए जाते। इसके अलावा युद्ध के आतंक को कम करने के लिए भी मसीहियत ने अपना पूरा प्रभाव डाला है। अपने आपको मसीही होने का दावा करने वाले कैदियों से सभ्य बर्ताव किया जाता है, और झगड़ा न करने वाले देशों को प्राय: प्रतिरक्षा प्रदान की जाती है। घायल सिपाहियों की सम्भाल तथा उपचार ऐसी बातें हैं जिनकी प्राचीन समयों में कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। इस प्रकार शिष्ट बनने के यीशु के स्पर्श ने कई ऐसे लोगों को भी प्रभावित किया है जो उसके धर्म को नहीं मानते हैं।

इस आरोप के उत्तर में कि शांति के राजकुमार के अनुयायियों ने युद्ध करवाए, यह

कहना ही काफ़ी है कि वे लोग अपने अगुवे के सिद्धांतों से दूर हो गए थे।

मूर्तिपूजा में कमी

मूर्तिपूजा करने वालों में सबसे सामान्य उपासना राजा की पूजा थी, चाहे उस राजा ने कितनी भी नीच ज़्यादतियां क्यों न की हों। परन्तु, देवता भी नैतिक रूप से मानवीय राजाओं से अधिक अच्छे नहीं थे। इसलिए, यह हैरानी की बात नहीं है कि कुल मिलाकर मूर्तिपूजा को अनैतिक ही माना जाता है। मूर्तिपूजा करने वाले लाखों-करोड़ों का मसीहियत में परिवर्तन स्वाभाविक रूप से मूर्तिपूजा में कमी और मूर्तियों के मन्दिरों के गिरने का कारण बना है।

साधारण नैतिकता

वर्षों से बाइबल की शिक्षा का विरोध करने वाले लोग अनैतिकता की ही शिक्षा देते रहे हैं। वे वही बात करते हैं जिनकी वे शिक्षा देते हैं। यह मानना पड़ेगा कि ''नास्तिकवाद किसी बुरे व्यक्ति को भला नहीं बनाएगा।'' इसकी तुलना में, मसीहियत को अपना आप दे देने वाले लगातार बुराइयों से मुंह मोड़कर आदर्श नैतिक आचरण की ओर मुड़ते हैं। बाइबल के निर्देश स्पष्ट रूप से नैतिक आदर्शों को बढ़ाते हैं।

कार्य की गरिमा

किसी समय हाथ से काम करना सम्माननीय लोगों में निम्न स्तर का कार्य माना जाता था। इसे केवल गुलामों का काम माना जाता था। प्लैटो और अरस्तु की शिक्षा थी कि परिश्रम करना अपमान की बात है। कहते हैं कि सम्राट अगस्तुस ने एक बार अपने एक अधिकारी को एक बाग में एक मित्र की सहायता के लिए काम करने के कारण ही प्राण दण्ड दे दिया था। परन्तु, यीशु द्वारा बढ़ई का और पौलुस द्वारा तम्बू बनाने वाले के रूप में काम करने से परिश्रम करने वालों को यह शिक्षा दी गई कि किसी कार्य को ''गुलामी का चिह्न'' न माना जाए। परिश्रम की गरिमा को सम्मान मिलने लगा। अब इस विचार को उन लोगों में भी मान्यता मिलने लगी है जो मसीही नहीं हैं। इस प्रकार मसीहियत ने न केवल नैतिक और आत्मिक संसार को ही बल्कि व्यावहारिक संसार को भी प्रभावित किया है।

जीवन के प्रति विचार

बाइबल में कम विश्वास करने वाले लोगों का जीवन के प्रति निराशाजनक विचार रहता है।

> संसार को जिसमें हम रहते हैं गड़बड़ और दुर्घटना का परिणाम कहा जा सकता है; परन्तु यदि यह किसी विवेकशील उद्देश्य का परिणाम है, तो यह उद्देश्य अवश्य ही किसी अति दुष्ट का होगा। क्योंकि मुझे तो दुर्घटना ही कम पीड़ादायक

और अधिक संभव लगने वाला अनुमान लगता है।[1]

एक प्रसिद्ध विद्वान, लुक्रेटियुस ने जीवन का वर्णन ''अंधेरे में लम्बे संघर्ष''[2] के रूप में किया है। इस प्रकार के विचार देने वाले लोगों को पता नहीं होता कि वे संसार में क्यों हैं। कइयों के लिए, आत्महत्या एक शुभ विचार बन जाता है। जीवन के उद्देश्य के लिए, अविश्वासी लोग केवल खोखले दर्शन (फिलॉसफियां) ही दे सकते हैं। वे खाली आकाश से सूर्य की चमक को बेजान पृथ्वी पर रोशनी देते हुए देखकर बिल्कुल ही अकेले हो जाते हैं। निराशा का राज्य उन्हीं का है।

प्रश्न पूछने वाले को किसी जड़वादी दार्शनिक से केवल एक ही उत्साह मिल सकता है ''जिसे जान नहीं सकते उस पर विचार करें।'' इसके विपरीत, विश्वासी लोग आशावाद और उद्देश्य से भरपूर जीवन जीते हैं जिसमें सांत्वना और आनन्द है।

मृत्यु के प्रति विचार

मृत्यु का सामना होने पर अविश्वासियों की हालत कितनी दयनीय और दुखद हो जाती है। लुक्रेटियुस ने ''अपने पीड़ित हृदय को बर्फ के पूर्ण विनाश के एनेस्थिसिया से शक्तिहीन करने की इच्छा की।'' किसी ने कहा है:

> जो अभी भी मसीह के कदमों में झुकते हैं उन्हें बीत रहे समय की वेदना, अकेलेपन की वेदना और आने वाले विनाश के भय की वेदना के बारे में बिल्कुल ज्ञान नहीं है। वे अपने मार्ग में विश्वस्त और शांत होकर चलते हैं। मैं अपना जीवन उनके चकाचौंधपूर्ण भ्रम में रहने के लिए दे देता, ... इस विश्वास के न होने पर कोई ऐसी बात, कोई आशा या कोई अविश्वासी व्यक्तित्व के बाहर तो हर बात आतंक और अंधेरा है।

''भयभीत'' शब्द ही है जो मृत्यु शय्या पर वोल्टेयर, डेविड ह्यूम और थॉमस पेन जैसे अविश्वासियों की प्रतिक्रियाओं का वर्णन कर सकता है। अपने अन्तिम दिनों में पौलुस, यूहन्ना और पोलिकार्प[3] जैसे विश्वासियों के विचार अवश्य ही आनन्ददायक और सुन्दर रहे होंगे। मसीहियत का प्रभाव मृत्यु के समय पर भी है जो कि सोने से भी मूल्यवान है।

मसीहियत से संसार को लाभ

मसीहियत का प्रमुख उद्देश्य पापियों को पवित्र लोगों में बदलना है। परन्तु, उस प्रमुख उद्देश्य से और कई लाभदायक बातें भी मिल जाती हैं।

शिक्षा

शिक्षा के क्षेत्र में मसीहियत का ज़बरदस्त प्रभाव है। 1550 और 1700 के बीच यूरोप में बीस बड़े विद्यालयों की स्थापना, बाइबल पर विश्वास रखने वालों ने ही की थी।

अमेरिका में, लगभग हर बड़े विश्वविद्यालय की स्थापना धार्मिक लोगों ने ही की थी। इन विद्यालयों में अविश्वासियों की घुसपैठ दुखद है, परन्तु इस तथ्य से मसीहियत का वह प्रभाव समाप्त नहीं हो जाता जिससे ये विद्यालय आरम्भ हुए थे। जिन देशों में बाइबल पढ़ाई जाती है वहां की साक्षरता दर सब देशों से अधिक मिलेगी।

साहित्य

अच्छे साहित्य पर बाइबल का प्रभाव इतना अधिक है कि दूसरी सभी किताबें बाइबल का ही अपमिश्रण बन गई हैं। बाइबल की श्रेष्ठता के कारणों के रूप में इसके चार साहित्यिक गुण, विविधता, शक्ति, विश्वव्यापकता और सुन्दरता दिए गए हैं। पुस्तकों की आधुनिक छपाई का आरम्भ बाइबल के छपने से ही हुआ था। भारत में छपने वाली सबसे पहली पुस्तक बाइबल ही थी। ''सामान्यत: कपड़े की ऐंठन और बुनाई सजावट के लिए ही नहीं की जाती बल्कि वह उसका इतना अनिवार्य भाग होता है कि इस के निकलने से कपड़े के धागे सीधे होने पर पूरा कपड़ा ही खराब हो जाएगा।''

संगीत

बाइबल से अच्छे-अच्छे भजन लिखने की प्रेरणा मिली है। उन भजनों में से कुछ का हिन्दी अनुवाद ''खुश हो खुदावन्द आया है,'' ''सुन आसमानी फ़ौज शरीफ़, गाती रब की तारीफ़,'' ''मुझे ब्यान सुनाओ कदीम से मशहूर,'' ''हमें रहता है रोज़ वह याद सदा'' और ''दिल के दाग़ को धोवे कौन'' भी कलीसिया में गाया जाता है।

कला

संसार के कुछ सबसे बहुमूल्य चित्रों को बाइबल के थीम के आधार पर ही बनाया गया है। सबसे अधिक प्रचलित चित्रों में लियोनार्डो डा विन्सी के ''द लास्ट सप्पर,'' रफ़ायल के ''द सिसटाइन मैडोना,'' वैन डिक्क के ''क्राइस्ट एण्ड द ट्राइब्यूर'' और रैम्ब्रैन्ड्ट के ''द प्रोडिगल सन'' प्रसिद्ध हैं।

बदला हुआ संसार

इसमें कोई दो राय नहीं कि जहां भी मसीह का खमीर गया वहां नैतिक और आत्मिक बदलाव अवश्य आया है। यह बदलाव इतना व्यापक है कि इसे बाइबल के किसी भी आश्चर्यकर्म से बड़ा माना जाता है। एक मनुष्य के लिए समुद्र बनाना पृथ्वी को परमेश्वर के ज्ञान से ''एक अशिक्षित बढ़ई'' द्वारा भरने की तरह है। जीनो, प्लैटो, सुकरात और कई अन्यों ने व्यावहारिक शिक्षाएं घोषित करने के व्यर्थ प्रयास किए, परन्तु, यीशु ने संसार के अधिकतर लोगों के लिए जीवन के एक नये मार्ग के बारे में सिखाकर उसे स्थापित कर दिया।

मसीहियत की अन्य आश्चर्यजनक उपलब्धि अलग-अलग लोगों को एक धर्म में

लाकर उनमें एकता लाने की है जो पुराने समय के लोगों के लिए असम्भव लगता था। सेल्सस ने कहा था, ''यह कल्पना करने के लिए कि यूनानी और असभ्य लोग एशिया, यूरोप, लिबिया में कभी एक ही धर्म की प्रणाली में एक हो पाएंगे, व्यक्ति को बहुत कमजोर होना चाहिए।''

मसीहियत के प्रभाव की व्यापकता और विभिन्नता का विचार हर प्रकार की मानवीय व्याख्या को अपर्याप्त कर देता है। नास्तिक इतिहासकार एडवर्ड गिब्बन, जो किसी भी अन्य विद्वान से मसीहियत के विकास के वास्तविक तथ्यों को अधिक जानता था, उस विकास के मानवीय कारणों को बयान करने के लिए बाधित हो गया था। उसने जोश, भावी जीवन की शिक्षा, कथित चमत्कारी शक्ति, शुद्ध आचरण, और अनुशासन के पांच गुणों की सूची बनाई थी। परन्तु ये सभी गुण यीशु के आने से पहले भी थे। मसीहियत के इतने ज़ोर से फैलने और प्रभाव की व्याख्या करने में ये पांच कारण असफल हो जाते हैं। ये कारण यीशु के परमेश्वर होने की व्याख्या से बचने के लिए प्रत्येक सम्भावित व्याख्या देने के लिए गहन अध्ययन लगते हैं। इसी इतिहासकार ने कहा है, ''रोमी जगत में पाए जाने वाले आराधना के विभिन्न ढंगों को लोग सत्य मानते थे; दार्शनिक उन्हें झूठ; और न्यायाधीश उन्हें उपयोगी मानते थे।''[4]

मसीहियत के विषय में अविश्वासी लोग चाहे कुछ भी कहें, परन्तु वे बाइबल की शिक्षा से इस संसार को मिलने वाले लाभों का आनन्द हर रोज़ उठाते हैं। परमेश्वर में विश्वास बढ़ने से रोक कर, वे अपने आप में पूरी शक्ति से उसे नाश कर रहे हैं जिससे उन्हें और उनके परिवारों को आशीष मिलती है अर्थात वे पेड़ की उसी डाली को काट रहे हैं जिस पर वे बैठे हैं।

सारांश

बाइबल की शिक्षा ने जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। मीलों और सालों तक इसकी अद्‌भुत पहुंच बाइबल को मनुष्य की बनाई पुस्तक से अधिक पहचान दिलाती है। इसके प्रभाव का प्रमाण इसके परमेश्वर की प्रेरणा से होने का संकेत देता है।

पाद टिप्पणियां

[1]बर्टरेण्ड रस्सल, *वाय आई ऐम नॉट ए क्रिश्चियन* (न्यूयॉर्क: साइमन एण्ड शुस्तर, 1957), 93. [2]लुक्रेटियुस, *ऑन द नेचर ऑफ थिंग्स,* जॉन बर्टलेट में उद्धृत। [3]पोलीकार्प समुरने के आरम्भिक मसीहियों में एक अगुआ था, जहां एशिया की सात कलीसियाएं थीं। वह वहां की कलीसिया में एक प्राचीन अर्थात ऐल्डर होगा। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* के अंग्रेज़ी संस्करण (मार्च 1999): 34-35 के अंक ''रेवलेशन, 2'' में एक मसीही शहीद के रूप में पोलीकार्प की मृत्यु की नाटकीय कहानी दी गई है। [4]एडवर्ड गिब्बन, *द हिस्टरी ऑफ़ द डिक्लाइन एण्ड फाल ऑफ़ द रोमन अम्पायर,* बर्टलेट, 340 में उद्धृत।